RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 50 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 4 मार्च, 2018

विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-74, अंक : 50, 1-4 मार्च 2018 तदनुसार 21 फाल्गुन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

तुझे किसी दाम न त्यागूँ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्।
न सहस्त्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।।

-ऋ. ८।१।५

शब्दार्थ-हे अद्रिवः = सम्पूर्ण भोग सामग्री के प्रदान करने वाले भगवन्! मैं **त्वाम्** = तुझको **महे+शुल्काय+चन** = बहुत बड़े शुल्क के लिए भी **न+परा+देयाम्** = न छोड़ूँ। हे **वज्रिवः** = वारकशक्ति-सम्पन्न! **शतामघ** = अनन्त धनवाले! **न** = न **शताय** = सौ के बदले **न** = न **सहस्त्राय** = हज़ार के बदले और **न** = **अयुताय** = दस हज़ार के बदले तुझे त्यागूँ।

व्याख्या-जीव की विचित्र दशा है। एक ओर भगवान् है और दूसरी ओर भोगभरा जहान है। भगवान् दीखता नहीं, भोगों सहित जहान सबके सामने है। संसार की साधारण नीति यही है कि वह अप्रत्यक्ष+परोक्ष के लिए प्रत्यक्ष का त्याग नहीं करता, वरन् प्रत्यक्ष के समक्ष परोक्ष को परोक्ष कर देता है। वह तो पहले ही से परोक्ष हो रहा है। यम ने नचिकेता को कहा था-

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि।।
इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः।
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः।।

-कठो० १।१।२३,२५

सौ-सौ वर्ष की आयु वाले पुत्र-पौत्र माँग ले, बहुत-से पशु, सुवर्ण, हाथी, घोड़े, भूमि का विशाल ठिकाना और यावदिच्छ चिरजीवन माँग ले। रथों समेत, बाजों-गाजों वाली ये स्त्रियाँ हैं। साधारण मनुष्यों को ये नहीं मिल सकतीं। तुझे मैं ये सब देता हूँ। इनसे अपनी सेवा-शुश्रूषा करा, किन्तु मृत्यु के पश्चात् की बातें न पूछ।

यह मनोविज्ञान का पण्डित है, परोक्ष से हटाकर नचिकेता को प्रत्यक्ष से जोड़ना चाहता है। बेटे, पोते, हाथी, घोड़े, धन-धान्य, नाचना, गाना आदि सभी प्रत्यक्ष हैं। इनमें एक भी परोक्ष नहीं है। यम कहता है, इनको ले-ले, किन्तु परोक्ष बात, मरने के पीछे की बात मत पूछ। जो आस्तिक है, जिसे ज्ञात है कि भगवान् शतामघ है, वह कहता है-**'त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्यावियां च गुहा वसूनि' [ऋ० १०।५४।५]** = तू उन समस्त सुखदायक धनों को धारण करता है जो प्रकट और गुप्त हैं।

जब सारे गुप्त-प्रकट सुखदायक पदार्थ भगवान् में हैं और भगवान् से बढ़कर कोई दाता भी नहीं, तो फिर क्यों न उसी एक का अवलम्बन किया जाए? इसी भाव से भक्त कहता है-**'महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्।'** बड़ी-से-बड़ी सम्पत्ति के लिए भी भगवान् का त्याग न करूँ अर्थात्-**'माहं ब्रह्म निराकुर्याम्'** = मैं ब्रह्म का निराकरण न करूँ। जो ब्रह्म का निराकरण करेगा, उसका अपना निराकरण हो जाएगा। समस्त संसार का ऐश्वर्य एक ओर और ईश्वर एक ओर। संसार और उसका ऐश्वर्य क्षणभंगुर है, किन्तु ईश्वर नित्य है। नित्य के बदले अनित्य को कौन ले? ये ऐश्वर्य आज हैं कल नहीं, किन्तु-**'पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि' [ऋ० ७।३२।२४]** = अनन्त धनवाला भगवान् तो सदा से है। भगवान् को लेने से उसका सनातन धन भी मिल जाएगा। केवल धन के मिलने से भगवान् का मिलाप संशयास्पद ही रहता है, अतः धन की अपेक्षा धन वाले को अपना बनाना कल्याणकारी है। समस्त संसार मिल जाए, किन्तु यदि भगवान् न मिला, तो सब व्यर्थ है। यह सब संसार संसाराधार पर वार दो, किन्तु उसे न त्यागो।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्।
मा नो अति ख्य आगहि।।

-ऋ० १.४.३

भावार्थ- हे परमात्मन्! आप हमें सदाचारी, परोपकारी, विद्वान् अपने भक्त, महात्मा सन्तजनों का सत्सङ्ग दो क्योंकि सत्सङ्ग के प्रभाव से अनेक नीच उत्तम बन गये, मूर्ख विद्वान् बन गये। जिनको प्रथम कोई नहीं जानता था, वे माननीय कीर्तिवाले बन गये। दुराचारी दुर्व्यसनी पतित भी आपके अनन्य भक्त सदाचारी और पतितपावन बन गये। सत्सङ्ग से जो-जो लाभ होते हैं, वे लिखे वा कहे नहीं जा सकते। इसलिए पिताजी! आपने हमको वेद द्वारा कहा है कि तुम मेरे से सत्संग की प्रार्थना करो, जिससे तुम्हारा यह मनुष्य-जन्म सफल हो। बिना सत्संग के श्रद्धाहीन महामलीन पराधीन निशदिन विषयों में लीन, व्यर्थ बकबक करने वालों को कुछ भी लाभ नहीं होता।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

-ऋ० १०.१२.१.१

भावार्थ- जो परमात्मा इस संसार की रचना से प्रथम एक ही जाग रहा था, जीव गाढ़ निद्रा में लीन से और जगत् का कारण भी सूक्ष्मावस्था में था, उसी परमात्मा ने पृथिवी, सूर्य, चन्द्रादि लोकों को उत्पन्न करके धारण किया हुआ है, वही सुखस्वरूप सबका स्वामी है, उसी सुखदाता जगत्पति की श्रद्धा और प्रेम से सदा भक्ति करनी चाहिये अन्य की नहीं।

ध्वनि प्रदूषण और उसका निदान

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

वायु एवं जल के उपरान्त ध्वनि ही हमको सबसे अधिक प्रभावित करती है। ध्वनि ही वाणी के रूप में व्यक्त होकर हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्धों को बनाने-बिगाड़ने में मुख्य घटक है। यही हमारे ज्ञानार्जन का साधन भी है। मानव ने आज तक जो विकास किया है उसमें वाणी का मुख्य स्थान है। हर प्राणी की वाणी में भिन्नता होती है। ध्वनि के माध्यम से हम गहरे अन्धकार में भी किसी प्राणी की आवाज़ को सुनकर तुरन्त जान लेते हैं कि कौन बोल रहा है। ध्वनि की तीव्रता हमें स्पष्ट बता देती है कि शेर दहाड़ रहा है, बकरी मिमिया रही है, गाय रंभा रही है, मेंढक टर्रा रहा है आदि। बहुत लोग अंधकार में केवल पद चाप की ध्वनि सुनकर ही जान लेते हैं कि परिवार में से कौन व्यक्ति आ रहा है।

ध्वनि की तीव्रता जब अवाञ्छित वा अप्रिय हो जाती है तब यह शोर कहलाता है। यही शोर-ध्वनि प्रदूषण है। ध्वनि प्रदूषण भी वायु एवं जल प्रदूषण के समान हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हमारे देश में ध्वनि प्रदूषण विश्व में सबसे अधिक है। हमारे देश में सांस्कृतिक व्यवस्था के साथ शोर-गुल जुड़ा हुआ है। शादी-विवाद हो जन्म दिन, मेले, त्यौहार हो तब प्रसन्नता प्रदर्शन में लाउड स्पीकर का उपयोग आवश्यक होता है। लाउड स्पीकरों के शोर के कारण कभी-कभी साम्प्रदायिक दंगे भी हो जाते हैं। हमारे देश में ध्वनि प्रदूषण को रोकने का कोई प्रयत्न भी नहीं किया गया है।

ध्वनि प्रदूषण की परिभाषा-'अवाञ्छित ध्वनि जो कि मानवीय सुविधा, स्वास्थ्य तथा गतिशीलता में हस्तक्षेप करती है अथवा प्रभावित करती है ध्वनि प्रदूषण है।' डॉ. वी. राय ध्वनि प्रदूषण को सरल भाषा में इस प्रकार परिभाषित करते हैं 'अनावश्यक असुविधाजनक और निरर्थक आवाज ही ध्वनि प्रदूषण है।'

(1) ध्वनि प्रदूषण के स्रोत-'परिवहन के साधनों में मोटर वाहन, दुपहिया अथवा तिपहियां गाड़ियां तथा रेल गाड़ियां मुख्य हैं। इनके हॉर्न लगातार बजते रहते हैं। इनके कारण ध्वनि प्रदूषण सबसे अधिक होता है। शहरों में प्रतिदिन हजारों मोटरें, स्कूटर, मोटर साइकिलें आवाज़ करते हुए हमारे मकानों के सामने से होकर निकलते हैं। इनके द्वारा सबसे अधिक ध्वनि प्रदूषण हो रहा है। वायुयानों से भी ध्वनि प्रदूषण होता है।'

(2) कल कारखाने-वर्तमान युग में औद्योगिकीकरण के कारण नए-नए कारखाने लगाए जा रहे हैं। इनमें रात-दिन गड़गड़ाहट होती रहती है। इन कारखानों में कार्यरत मजदूर भी शोर का कारण बनते हैं। औद्योगिक कारखानों में 90 डेसीबेल तक शोर रहता है।

(3) घरेलू मनोरंजन के साधन-'ज्यों-ज्यों मनुष्य दैनिक जीवन में विलासिता पूर्ण वस्तुओं को अपना रहा है त्यों-त्यों ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है। विलासिता पूर्ण साधनों में रेडियों, टी. वी. तथा वीडियो आदि प्रमुख साधन हैं। इनसे घरों के अन्दर भी असहनीय ध्वनि उत्पन्न होती है।'

(4) सामाजिक धार्मिक कार्य-गुरूद्वारों, मन्दिरों में लाउड स्पीकरों द्वारा पूजा करना, जन्म दिन उत्सव मनाना, शादी-विवाह तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यों में लाउड स्पीकरों का उपयोग ध्वनि प्रदूषण को जन्म देता है।

(5) राजनीतिक गति-विधियां-हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था में प्रत्येक शहर में कभी न कभी, कुछ न कुछ चुनाव होते रहते हैं। चुनाव प्रचार के लिए विभिन्न दलों के सैंकड़ों व्यक्तियों द्वारा लाउड स्पीकर का प्रयोग करके ऊंची आवाज में प्रचार किया जाता है। इससे पूरा शहर ध्वनि प्रदूषण में डूब जाता है।

हमारे देश में औद्योगिकरण, शहरीकरण तथा परिवहन साधनों का समान रूप से सभी क्षेत्रों में विकास नहीं हुआ है। फलस्वरूप ध्वनि प्रदूषण की दर में भी क्षेत्रीय स्तर पर विभिन्नताएं मिलती हैं। हमारे देश में ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण की दर में विभिन्नता मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ध्वनि स्तर 25 से 30 डेसीबेल तक रहता है जबकि उपनगरीय क्षेत्रों में ध्वनि स्तर 30 से 40 डेसीबेल तक तथा नगरीय आवासीय क्षेत्रों में 40 से 50 डेसीबेल एवं औद्योगिक नगरीय क्षेत्रों में 50 से 60 डेसीबल तक ध्वनि स्तर रहता है। मुम्बई में ध्वनि स्तर 85 डेसीबेल, दिल्ली में 89 डेसीबेल, कोलकाता में 87 डेसीबेल, चेन्नई में 89 डेसीबेल ध्वनि स्तर रहता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सुरक्षा की दृष्टि से दिन में 55 डेसीबेल तथा रात्रि में 45 डेसीबेल ध्वनि को मानक ध्वनि स्वीकृत किया है।

ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव-(1) तीव्र ध्वनि से श्रवण शक्ति का ह्रास होता है। शोर सबसे अधिक कानों को प्रभावित करता है। निरन्तर शोर के सम्पर्क से कान के भीतरी भाग की तंत्रिकाएं धीरे-धीरे संवेदनशील होने लगती हैं जिससे मनुष्य में श्रवण दोष आरम्भ हो जाता है और अन्त में व्यक्ति बहरा हो जाता है। कभी-कभी मनुष्य पागल भी हो जाता है।

(2) 90 डेसीबेल से अधिक ध्वनि वाले वातावरण में सिर दर्द, बहरापन, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, हृदय रोग में वृद्धि एवं सोचने की शक्ति में कमी आ जाती है। अत्याधिक शोर के सम्पर्क में रहने से मनुष्य उच्च रक्तचाप का रोगी बन जाता है।

(3) तीव्र ध्वनि से जन्तुओं के हृदय, मस्तिष्क एवं यकृत को भी हानि पहुंचती है। ध्वनि प्रदूषण से शिशुओं के जन्म पर भी प्रभाव पड़ता है। गर्भ में पल रहे शिशु भी शोर के कुप्रभाव से प्रभावित होते हैं। गर्भस्थ शिशु के दिल की धड़कन शोर के कारण असामान्य तीव्रता से बढ़ जाती है वह बाद में अनेक रोगों का कारण बनती है।

(4) तीव्र ध्वनि से सूक्ष्म जीवाणु नष्ट हो जाते हैं जिससे मृत अवशेषों के अपघटन में बाधा पहुंचती है।

(5) तीव्र ध्वनि वाले वातावरण में नींद नहीं आती है, इससे शरीर में मेलाटेनिन का निर्माण कम होने लगता है। मेलाटेनिन की कमी से शरीर का रोग प्रतिरोधक तंत्र कमजोर होने लगता है। कुछ समय पश्चात् इस तंत्र से सम्बन्धित अन्य रोग भी उत्पन्न हो सकते हैं।

ध्वनि प्रदूषण को रोकने के उपाय-

(1) औद्योगिक इकाइयों व ध्वनि उत्पन्न करने वाले कारखानों को शहरी व ग्रामीण बस्तियों से दूर स्थापित करना चाहिए।

(2) खराब मोटर गाड़ियों, ट्रकों व अन्य वाहनों का आवासीय क्षेत्रों से निकालने पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

(3) मोटर गाड़ियों व अन्य वाहनों में तीव्र ध्वनि करने वाले हॉर्न के बजाने पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। मशीनों तथा वाहनों में साइलेन्सर का उपयोग किया जाना चाहिए।

(4) त्यौहारों तथा शादी के अवसरों पर आतिशबाजी या पटाखों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

(5) आग्नेय शास्त्रों तथा अन्य विस्फोटक पदार्थो के प्रयोग पर भी प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

(6) वाहनों के रख-रखाव तथा इंजिनों की समय-समय पर मरम्मत की जाए।

(7) वाहनों में घटिया किस्म के ईधन का उपयोग न किया जाए।

(8) आम, इमली, ताड़ तथा नीम के पेड़ लगाए जाएं। इनके लगने से 10 से 15 डेसीबेल तक शोर कम हो जाता है।

अब हम वेदों में ध्वनि प्रदूषण के विषय में क्या कहा गया है इसका अध्ययन करते हैं। वेद के अनुसार हमें उतना ही बोलना चाहिए और उतना ही जोर से बोलना चाहिए जितना आवश्यक है। निम्न मंत्र में यही बतलाया है।

नैतां ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपति उत्तवे।

मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम।। अथर्व. 5.18.1

अर्थ-(नृपते) हे नरपति राजन्। (ते) तेरे (देवा) दिव्य गुण वाले पुरूषों ने (तुभ्यम्) तुझे (एताम्) इस वाणी को (अत्तवे) नाश करने को (न) नहीं (अददुः) दिया है। (राजन्य) हे राजन्। (ब्राह्मणस्य) वेद वेत्ता पुरूष की (गाम्) वाणी को (अनाद्यम्) जो नष्ट नहीं हो सकती है (मा जिघासः) मत नाश कर।

भावार्थ-सभ्य वाणी श्रेष्ठ पुरूषों के सम्पर्क से मिलती है। इस श्रेष्ठ वाणी का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। वाणी का दुरूपयोग नाश का कारण बन जाता है।

वेद में असत्य भाषण का तीव्र

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

बासन्ती नवसस्येष्टि-होली का पर्व

छान्दोग्य उपनिषत् में धर्म को वृक्ष का रूपक देकर उसके तीन सकन्ध बताए गए हैं-

त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।

इसमें यज्ञ, अध्ययन और दान धर्म के तीन अंग हैं। आर्यों के पर्वों पर इन तीन धर्मों- यज्ञ, अध्ययन और दान का विशेष रूप से सम्पादन किया जाता है, जो आर्य जनता के हृदय को आनन्द से पूरित कर देता है। यही आर्यों के पर्व की पर्वता है। पर्व के दिन प्रतिदिन के व्यवसायों की दौड़-धूप से अवकाश पाकर आर्यगृहों में विशेषता से आनन्दपूर्वक यज्ञ, अध्ययन और दान का अनुष्ठान किया जाता है। आर्यजाति के प्रत्येक पर्व पर इन रूढ़ि या विशेषार्थ विशिष्ट यज्ञ, अध्ययन तथा दान का अनुष्ठान अवश्य होता है। प्रत्येक पर्व क्या, आर्यों के प्रत्येक संस्कार में यज्ञ अर्थात् हवन अवश्य किया जाता है। हवन में वेदमन्त्रों का पाठ अनिवार्य ही है और प्रत्येक पर्व या संस्कार पर दान भी अवश्य कर्त्तव्य है। यदि आर्यजाति के पर्वों की गम्भीर और दीर्घदृष्टि से पर्यालोचना की जाए तो ज्ञात होगा कि वैदिक पर्व जहां धर्मानुष्ठान के लिए प्रसिद्ध हैं, वहाँ उनमें कभी-कभी किसी विशेष दिन अर्थात् पर्व के दिन हृदयोल्लास-प्रदर्शन की मानुषी स्वाभाविक प्रवृत्ति के साथ-साथ कई अन्य शुभ उद्देश्य भी सम्मिलित थे। पर्वों के उत्पादक चार उद्देश्य निहित हैं-

१. किसी आवश्यक अवसर पर किसी बड़े यज्ञ के लिए आयोजन करना। यद्यपि यज्ञ, संगतिकरण आदि के यौगिक अर्थ से परोपकारमात्र का द्योतक है, तथापि वैदिककालीन पर्व विशेषत: यज्ञ के सम्पादनार्थ चलाए गए थे।

२. किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन की समारोहपूर्वक सूचना देने के लिए। दीपावली, होलिका महोत्सव, संवत्सरेष्टि तथा नवसंवत्सराम्भ दिन आदि पर्व इसी श्रेणी के अन्तर्गत हैं।

३.सर्वसाधारण के मनोरंजन और हृदयोल्लास प्रकाश के लिए शरत्पूर्णिमा, हरितृतीया, वसन्तपंचमी और होलिका महोत्सव आदि इसी वर्ग में सन्निविष्ट हैं।

४. किसी युगप्रवर्त्तक महात्मा, अद्वितीय कर्मवीर, शूरवीर, आदर्शप्रतापी महापुरूष की किसी ऐतिहासिक घटना की स्मृति को यादगार बनाने के लिए। यह ऐतिहासिक उद्देश्य कहा जा सकता है।

होली का पर्व फाल्गुन शुदि पूर्णिमा को सम्पूर्ण भारतवर्ष में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव के लगभग सवा मास के पश्चात यह पर्व आता है। शास्त्रों में इसे बासन्ती नवसस्येष्टि के नाम से कहा गया है। आवासों की परिष्कृत्ति के लिए तथा बसन्त की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोधार्थ हवन यज्ञ से वातावरण को शुद्ध करने के प्रयोजन से आषाढ़ी फसल के यवों से देवयज्ञ करने के लिए आषाढ़ी नवसस्येष्टि अभिप्रेत है। संस्कृत में अग्नि के भूने हुए अर्द्ध-पक्व अन्न को होलक कहते हैं। तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके शमीधान्य फलीवाले अन्न को होलक कहते हैं। होला स्वल्पवात है और मेद चर्बी कफ और श्रम के दोषों को शमन करता है। जिस अन्न का होला होता है, उसमें उसी अन्न का गुण होता है। इसीलिए आषाढ़ी की नवीन फसल के आने पर नए यवों का होम करने के लिए इस अवसर पर प्राचीन काल में नवसस्येष्टि वा होलकोत्सव मनाया जाता था।

होली के पर्व पर सब लोग ऊँच नीच, छोटे-बड़े का विचार छोड़कर स्वच्छ हृदय से आपस में मिलते हैं। यदि किसी कारणवश वर्ष में वैर-विरोध ने मनों को अपना आवास बना लिया है तो उनको अग्निदेव की साक्षी में भस्मसात् कर दिया जाता है। अत: होली प्रेमसार का पर्व है। यह दो हृदयों को मिलाती है, एकता का पाठ पढ़ाती है। यह वर्ष भर प्रेम में तन्मय हो जाने का सबसे उत्तम साधक है। यह पर्व प्रत्येक हिन्दु के घर भारतवर्ष में समान रूप से मनाया जाता है। होली का पवित्र पर्व वस्तुत: आनन्द और उल्लास का महोत्सव था किन्तु काल की कराल गति से उसमें भी कदाचार और अभद्र दृश्यों ने प्रवेश पा लिया है। समय के साथ-साथ हमारे पर्वों को मनाने का ढंग बदल गया। पर्वों का उद्देश्य केवल खाना-पीना, मौज-मस्ती करना रह गया। पर्वों का शुद्ध स्वरूप प्राय लुप्त ही हो गया। बासन्ती नवसस्येष्टि के इस होलकोत्सव का स्वरूप भी नष्ट हो गया है। आज इस पर्व का स्वरूप ही नष्ट हो गया है। इस पर्व से पवित्रता की भावना समाप्त हो गई है और केवल रंग डालना, हुडदंग मचाना ही इस पर्व का स्वरूप रह गया है। इसीलिए आज लोग होली के दिन घर से बाहर निकलने से भी घबराते हैं। सभ्य समाज की पहचान उसके शालीन व्यवहार से होती है। इस दिन कुछ नवयुवक भाँग के नशे में चूर होकर राह जाती हुई माताओं-बहनों के साथ अभद्रता का व्यवहार भी करते हैं। होली के नाम पर इस अनुचित व्यवहार को उचित नहीं ठहराया जा सकता। आजकल जिस प्रकार से हमारे हिन्दू भाई होली मनाते हैं, उसको देखकर कोई भी बुद्धिमान् धार्मिक पुरूष यह मान सकता है कि यह हमारे पूर्व पुरूषों की चलाई हुई हो सकती है जिनकी विद्या और बुद्धि को देखकर सारा संसार विस्मित है और जिनके रचित ग्रन्थों और शिल्प निर्माणों को देखकर क्या स्वदेशी और क्या विदेशी सभी अपने मुख से उनकी उच्च सभ्यता की प्रशंसा किया करते थे। क्या आजकल होली में गाली गलौज या नशे में चूर होकर अश्लील शब्दावली का प्रयोग उन्हीं महापुरूषों का चलाया हुआ हो सकता है। इसीलिए आज हमें पर्वों के शुद्ध स्वरूप को जानना चाहिए।

पौराणिकों में होली के विषय में यह कथा भी प्रचलित है कि इस अवसर पर अत्याचारी दैत्यराज हिरण्यकशिपु ने अपने परमेशप्रेमी पुत्र प्रह्लाद के सजीव दाह के लिए अपनी मायाविनी बहिन होलिका द्वारा चिता रचवाई थी। उसने सोचा था कि होलिका अपनी राक्षसी हथकण्ड़ों से प्रह्लाद को जलवाकर आप चिता में से बचकर सुरक्षित निकल आएगी, किन्तु परमात्मा की असीम भक्तवत्सलता के कारण सत्याग्रही प्रह्लाद का बाल भी बाँका नहीं हुआ और राक्षसी होलिका ही उस चिता में भस्मसात् हो गई। उसी दिन से होलिका राक्षसी के दाह और भक्त प्रह्लाद के सुरक्षित रहने के उपलक्ष्य में यह होलिका उत्सव प्रचलित हुआ। इस पौराणिक कल्पना से भी यह शिक्षा मिलती है कि संकटों का सागर उमड़े, आपत्तियों की आँधी चले, लोग निन्दा करे या प्रशंसा, परन्तु एक सत्याग्रही का कर्त्तव्य है कि वह अपने निश्चित पथ से कभी विचलित न हो। यदि पिता वा अन्य गुरूजन भी सत्यपथ से हटाकर कुमार्ग की ओर ले जाएँ तो उनकी बात भी नहीं माननी चाहिए।

होली का पर्व पवित्रता, आपसी प्रेम और भाईचारे का पर्व है। यह पर्व हमें वैर, विद्वेष को मिटाकर सबके प्रति स्नेह की भावना रखने का संदेश देता है। होली का पर्व परिवार के आपसी मिलन का पर्व है। व्यर्थ किसी के ऊपर रंग डालकर इस पर्व की मर्यादा को भंग न करें। भाँग पीकर या नशा करके बुरी नियत से किसी के ऊपर रंग ड़ालना लड़ाई-झगड़े को बढावा देता है। पवित्रता की भावना के साथ इस पर्व को मिटाकर समाज में आपसी भाईचारे का संदेश दें। अगर इस भावना के साथ हम पर्व को मनाते हैं तो निश्चित ही समाज में एक अच्छा संदेश जाएगा। वैदिक संस्कृति के अनुसार मनाए जाने वाले पर्वों की यही विशेषता है कि उसमें समाज को एक नई दिशा देने का संदेश मिलता है।

-प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

प्रकृति संरक्षण के प्रति महर्षि दयानन्द का वैदिक दृष्टिकोण

ले.-पं. वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E कैलाश नगर, फाजिलका (पंजाब)

महर्षि दयानन्द प्रकृति संरक्षण के प्रति अत्यन्त संवेदनशील थे। जल हो वा भूमि, वन हों या उपवन अथवा अन्य पेड़-पौधे, वनस्पतियां हों या औषधियां, वायु हो या आकाश-इन सभी की वे शुद्धि चाहते थे।

जल और वायु की शुद्धि पर वह विशेष बल देते थे। क्योंकि यही दोनों स्वास्थ्य रक्षा के मूलाधार हैं। महर्षि के वेदभाष्य में इनके संरक्षण हेतु अनेकत्र निर्देश प्राप्त होते हैं। अवलोकनार्थ कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना अप्रासंगिक न होगा-

1. मनुष्यों को चाहिए कि नदियों के मार्गों, बम्बों, कूपों, जलप्रायदेशों, बड़े और छोटे तालाबों के जल को चला जहां कहीं बांध और खेत आदि में छोड़ के पुष्कल अन्न, फल, वृक्ष, लता, गुल्म आदि को अच्छी प्रकार बढ़ावें। यजु. 16/37

महर्षि ने इन पंक्तियों में ''गागर में सागर'' भर दिया है। नदियों पर बांध बना कर खेतों को जल पहुंचाने की अवधारणा में महर्षि की कितनी बड़ी दूरदर्शिता दृष्टिगोचर होती है। इतना ही नहीं नलकूपों, कूपों (कुओं), तालाबों आदि से भी सुविधानुसार खेतों तक जल पहुंचाने का संकेत है। जिससे कृषक अत्यधिक अन्न उत्पन्न कर सकें। साथ ही फल, वृक्ष, लताएं आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के वृक्षारोपण हेतु भी प्रेरित किया है जिससे वायु शुद्ध प्राप्त हो। लोग स्वस्थ रहें।

2. जो पुरुष जिन औषधियों को खोदे, वह उनकी जड़ न मेटे। जितना प्रयोजन हो उतनी लेकर नित्य रोगों को हटाता रहे। औषधियों की परम्परा को बढ़ाता रहे कि जिससे सब प्राणी रोगों के दुःख से बच के सुखी होवें। यजु. 12/95

महर्षि दयानन्द सभी मनुष्यों को स्वस्थ देखना चाहते हैं। अतः जड़ी-बूटी तोड़ने-काटने वाले व्यक्तिओं को सावधान कर दिया कि उन्हें जड़ से न काट देना जिससे वह समूल ही नष्ट हो जाय। ''न रहे, बांस, न बजे बांसुरी'' की उक्ति को चरितार्थ नहीं करना। साथ ही इनमें वृद्धि भी करना है जिससे औषधि की प्राप्ति की परम्परा समाप्त न हो जाय।

3. मनुष्यों को चाहिए कि प्रमाद को छोड़ के आकाश में वर्तमान वायु के वेग और वर्षा के प्रबन्धरूप मेघ का विनाश न करके अपनी-अपनी अवस्था को बढ़ावें। यजु. 13/42

महर्षि का कहना है-किसी मनुष्य को आलसी नहीं होना चाहिए। दूसरी बात, वर्षाकारक जो मेघ हैं उन्हें छिन्न-भिन्न न करें अर्थात् प्रदूषणयुक्त धुआं, गैस, रासायनिक तत्त्व अथवा एतादृश अम्ल आदि कल कारखानों, संयंत्रों से उत्पन्न कर आकाश में न पहुंचाएं। क्योंकि ये प्रदूषित तत्त्व आकाश में बादलों से मिल कर अम्लीय वर्षा करते हैं, वर्षा का जल प्रदूषित हो जाता है जो धरती पर आकर लाभ की अपेक्षा हानिकारक सिद्ध होता है।

क्योंकि आकाश से शुद्ध जल प्राप्त होने पर ही उसके सेवन से आयु में वृद्धि हो सकती है। लोग स्वस्थ रह सकते हैं।

4. महर्षि केवल मनुष्यों के स्वास्थ्य की ही चिन्ता नहीं करते अपितु गौ आदि पशुओं की भी वृद्धि चाहते हैं-

जो मनुष्य मेघ से उत्पन्न वर्षा और वर्षा से उत्पन्न हुए तृण आदि की रक्षा से गौ आदि पशुओं को बढ़ावें, वे पुष्कल भोग को प्राप्त होवें। यजु. 16/44

महर्षि के अनुसार जब आकाश मण्डल प्रदूषण रहित होगा तभी वर्षा का जल शुद्ध और स्वच्छ होगा। जब स्वच्छ होने पर धरती पर उगने वाले पेड़ पौधे, घास, फसल भी शुद्ध और अधिक उत्पन्न होगी। इससे गौ आदि पशुओं में वृद्धि होगी जिससे मनुष्यों को दुग्धादि भी शुद्ध मिलेगा और मनुष्य भी स्वस्थ, बलवान् और बुद्धिमान् होंगे।

इससे महर्षि की दूरदर्शिता स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

5. महर्षि दयानन्द ने मनुष्यों की वेदादि शास्त्रों से शोभा हेतु उपमान वृक्ष पशु एवं पक्षियों से चुनें हैं-

जैसे सुन्दर शाखा, पत्र, पुष्प, फल और मूलों से युक्त वृक्ष शोभित होते हैं वैसे ही वेदादि शास्त्रों के पढ़ने और पढ़ाने हारे सुशोभित होते हैं। जैसे पशु पूंछ आदि अवयवों से अपने काम करते और जैसे पक्षी पंखों से आकाश मार्ग से जाते और आनन्दित होते हैं वैसे मनुष्य विद्या और अच्छी शिक्षा को प्राप्त हो पुरुषार्थ के साथ सुखों को प्राप्त हों। यजु. 12/4

6. महर्षि ने वर्षा का कारण वृक्षों और वनों का आधिक्य होना माना है-

वन के वृक्षों की रक्षा के बिना बहुत वर्षा और रोगों की न्यूनता नहीं होती। यजु. 12/33

7. जब वसन्त ऋतु आता है तब पुष्प आदि के सुगन्धों से युक्त वायु आदि पदार्थ होते हैं। उस ऋतु में घूमना, डोलना पथ्य होता है। ऐसा निश्चित जानना चाहिए। यजु. 13/27

बाग-बगीचे, पार्क आदि स्थानों में भ्रमण कर स्वास्थ्य-लाभ करना अधिक हितकर है। प्रकृति के समीप रहकर ही यह प्राप्त किया जा सकता है।

8. जब वसन्त ऋतु आता है तब पक्षी भी कोमल मधुर-मधुर शब्द बोलते और अन्य सब प्राणी आनन्दित होते हैं। यजु. 13/28

मनुष्य को भी ऐसी सुन्दर ऋतु के मध्य कुछ समय निकाल कर भ्रमण करते हुए प्रफुल्लित वदन होकर प्रातः सायं खिले हुए पुष्पों को देखकर आनन्दित होना चाहिए। किसी विद्वान् का कथन है-

आनन्द स्रोत बह रहा, फिर तू क्यों उदास है?

9. ऐसे मधुमास अर्थात् वसन्त ऋतु में वातावरण यद्यपि आनन्ददायक होता है तथापि महर्षि दयानन्द उसे और भी आनन्दकर, स्वास्थ्यवर्धक, रोग निवारक बना देना चाहते हैं-

हे मनुष्यो! तुम लोग वसन्त ऋतु को प्राप्त होकर जिस प्रकार के पदार्थों के होम से वनस्पति आदि कोमल गुणयुक्त हों, ऐसे यज्ञ का अनुष्ठान करो और इस प्रकार वसन्त ऋतु के सुख को सब जने तुम लोग प्राप्त होओ। यजु. 13/29

10. मनुष्य वसन्त और ग्रीष्म ऋतु के जलाशयस्थ शीतल जल का सेवन करें जिससे गर्मी से दुःखी न हों और जिस यज्ञ से वर्षा भी ठीक-ठीक हो और प्रजा आनन्दित हो, उसका सेवन करो। यजु. 13/30

वस्तुतः यज्ञ वर्षा में केवल सहायक ही नहीं अपितु शुद्ध जल का कारक भी है और रोगनाशक भी। इसी के दृष्टिगत महर्षि दयानन्द ने यज्ञ द्वारा शुद्ध जल की वर्षा व हेतु प्रेरित किया है। वरना प्रदूषण युक्त वर्षा तो होती ही रहती है। यज्ञ विस्तार हेतु उनके विचारों पर दृष्टिगत करना अनुचित न होगा-

12. ऋत्विज् लोग घृत को शोध कर्त्री से अग्नि में होम कर और वायु तथा वर्षाजल को रोगनाशक करके सबको सुखी करते हैं। यजु. 15/43

13. अग्नि सुगन्धादि के होम से इष्ट सुख देता और यज्ञकर्ता जन यज्ञ की सामग्री पूरी करता है। यजु. 15/54

14. यह अग्नि अपने सूर्यादि रूप से सब पदार्थों से इस को ऊपर ले जा वर्षा के उत्तम सुखों को प्रकट करता है। यजु. 17/9

15. अग्निहोत्र आदि यज्ञ में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं अर्थात् बहुत सा पुष्टि, सुगन्धि, मिष्ट और रोग नाश करने वाला होम का पदार्थ, उसका शोधन, यज्ञ का करने वाला तथा वेदी, आग, लकड़ी आदि। यथाविधि से हवन किया हुआ पदार्थ आकाश में जाकर फिर वहां से जल के द्वारा आकर इच्छा की सिद्धि करने वाला होता है। ऐसा मनुष्यों को जानना चाहिए। यजु. 17/57

16. मनुष्यों को योग्य है कि चावल आदि से अच्छे प्रकार संस्कार किए हुए भात आदि को बना अग्नि में होम करें तथा आप खावें, औरों को खिलावें। यजु. 18/12

यज्ञ करने के लिए जो पदार्थ प्राप्त होते हैं वे कृषि द्वारा अन्न रूप में, गौ आदि पशुओं से घी, दूध आदि रूप में, वनों और वृक्षों से समिधाएं तथा औषधियां, जड़ी-बूटियां हवन सामग्री हेतु प्राप्त होती हैं। अतः महर्षि इन सभी की वृद्धि, उन्नति, स्वच्छता, शुद्धता और रक्षा चाहते हैं। अतः वह कहते है-

17. वनो को नहीं काटना। यजु. 16/20

18. वन आदि के रक्षक मनुष्यों को अग्नि आदि पदार्थ देने वृक्षों और ओषधि आदि पदार्थों की उन्नति करें। यजु. 16/19

जल का मानव जीवन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। अतः महर्षि सभी प्राणियों के लिए शुद्ध जल की कामना करते हैं। चाहे वह आकाश में हो, धरती पर अथवा धरती के अन्दर हो। सारा जल शुद्ध और हितकारी होना चाहिए-

19. जो जल पृथिवी के अन्दर अथवा ऊपर विद्यमान है, जो जल ओषधियों में है, जो जल द्यौलोक में है, जो जल अन्तरिक्ष अर्थात् सूर्य और पृथिवी के मध्य में स्थित है, जो दिशाएं और विदिशाएं हैं, वे हमारे लिए अत्यधिक सुन्दर, उत्तम, शुद्ध और हितकारी जल वाली होवें। यजु. 18/36

(क्रमशः)

ईश्वर के सन्निकट रहें

ले०-महात्मा चैतन्यमुनि महादेव, तहसील सुन्दरनगर, मण्डी (हि०प्र०)

यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक बात है कि बहुत से लोग ऐसे हैं जो ईश्वर के अस्तित्व को ही नहीं मानते हैं। वास्तविकता यह है कि यदि समूचे ब्रह्माण्ड में एक व्यवस्था है तो किसी न किसी व्यवस्थापक को तो मानना ही पड़ेगा क्योंकि बिना किसी व्यवस्थापक के व्यवस्था बन ही नहीं सकती है। इसीलिए कहा जाता है-If universe is an organised matter then there must be a organiser. बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि जितने भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक आदि हुए हैं वे भी ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते थे जब कि वास्तविकता यह है कि लगभग सभी उच्चकोटी के वैज्ञानिक न केवल ईश्वर के अस्तित्व को मानते थे बल्कि उन्होंने ईश्वर का पग-पग पर धन्यवाद किया है कि यदि ईश्वर पांच महाभूतों में मूलभूत गुण स्थापित न करते तो हम कोई आविष्कार कर ही नहीं सकते थे। ईश्वर वैज्ञानिकों का भी महावैज्ञानिक है क्योंकि उसने ही अग्नि, वायु, जल, पृथिवी और आकाश इन पांच महाभूतों में मूलभूत गुण एवं शक्तियां स्थापित की हैं। पृथिवी में गुरूत्वाकर्षण न्यूटन ने स्थापित नहीं किया बल्कि उसने इस बात की खोज की है। गुरूत्वाकर्षण स्थापित करने वाला तो परमात्मा है। इसी प्रकार अग्नि का स्वभाव ऊपर को उठने का है। अग्नि को आप चाहे बहुत बड़ी-बड़ी मोटी लोहे की चादरें बिछाकर रोकने का प्रयास करें मगर अग्नि फिर भी ऊपर को ही उठने का प्रयास करेगी.... जल को चाहे जितना भी ऊँचे से ऊँचा ले जाएं मगर उसकी स्वाभाविक गति नीचे को बहने की ही है..... इसी प्रकार वायु और आकाश में जो भी मूलभूत गुण व स्वभाव हैं वे ईश्वर द्वारा ही स्थापित हैं..... इनमें कोई किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं कर सकता है..... हां इनके आधार पर आगे से आगे कई प्रकार के आविष्कार आदि किए जा सकते हैं.....

आश्चर्य तो इस बात का भी है कि जो ईश्वर को मानते हैं वे भी ईश्वर को लेकर बहुत अधिक भ्रमित हैं। अभाग्य से आज हमारे समाज में इतने अधिक मत, मज़हब और संप्रदाय बन गए हैं कि सबने अपनी अलग-अलग मान्यताएं बना रखी हैं। इसकी सबसे बड़ी हानि यह हुई है कि हमारी नई पीढ़ी धर्म, कर्म, ईश्वर आदि के बारे में बहुत भ्रमित हो गई है। नई पीढ़ी बहुत मेधावी है अतः वह मत, मज़हब तथा सम्प्रदायों के ढकोसलों में तो आती नहीं है मगर बिना किसी गाईड-लाईन के सही दिशा में भी नहीं जा पाती है। अन्ततः धर्म, कर्म, सत्य एवं ईश्वर आदि से उनका विश्वास ही उठ जाता है। हां यदि उन्हें सही-सही दिशा-निर्देश देने वाला कोई वैदिक आचार्य मिलता है तो वे सन्तुष्ट हो जाते हैं क्योंकि आज की पीढ़ी हर बात के लिए लौज़िक मांगती है। ऐसी स्थिति में परमात्मा द्वारा आदि सृष्टि में दिया गया ज्ञान ही हमारा सही दिशा-निर्देश कर सकता है। क्योंकि वेद किसी मत, मज़हब व सम्प्रदाय के नहीं बल्कि मनुष्य मात्र के लिए स्वयं परमात्मा द्वारा आदिसृष्टि में दिया गया संविधान है.... दिशा निर्देश है.... यदि ईश्वर की बात करें तो वेद इस सम्बन्ध में कहता है कि परमात्मा इस सृष्टि के कण-कण में विराजमान है..... सर्वव्यापक है.... वह दिखाई इसलिए नहीं देता है क्योंकि वह इन भौतिक आंखों का विषय नहीं बल्कि आत्मा का विषय है.... वह आत्मा से अनुभूत होने वाला तत्व है..... यह ठीक है कि स्वाध्याय, सत्संग, प्राणायाम तथा योगाभ्यास आदि के द्वारा ही हमारी आत्मा ईश्वरानुभूति होने के योग्य बन सकेगी मगर हम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने आस-पास ईश्वर के अस्तित्व को वैचारिक स्तर पर निरन्तर अनुभव करें। क्योंकि ईश्वर कण-कण में विराजमान है अतः ऐसा मानना ही चाहिए कि ईश्वर हमारे बहुत ही समीप हैं..... निकट है.... बल्कि सबसे अधिक निकट ईश्वर ही हैं.....

परमात्मा को अपने सन्निकट समझने से हमारी बहुत सी समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाता है। जो परमात्मा को सर्वव्यापक तथा अपने अति-निकट समझता है। वह बुरे कर्म करने से बच जाता है। क्योंकि उसका व्यवहारिक चिन्तन बन जाता है कि परमात्मा मुझे हर समय, हर घड़ी व हर पल देख रहा है..... जब इस प्रकार का चिन्तन बनता है कि वह ईश्वर मुझे देख रहा है तो मैं बुरा काम कैसे कर सकता हूँ.... उसे यह भी लाभ होता है कि उसे परमात्मा की न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। वह यह मानकर चलता है कि यदि मैं बुरा काम करूंगा तो परमात्मा मुझे दण्ड देंगे और यदि अच्छा कर्म करूंगा तो मुझे प्रभु पुरस्कृत करेंगे। ऐसा चिन्तन करने के बाद भला कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो पुरस्कृत नहीं बल्कि दण्डित होना चाहेगा..... प्रभु को सर्वव्यापक मानने वाला व्यक्ति सभी पापों और दुःखों से छूट जाता है क्योंकि प्रभु को सर्वव्यापक मानने से वह समस्त दुरितों से दूर रहता है। अन्ततः दुरित ही हमारे पापों का तथा दुःखों का कारण बनते हैं अतः इस प्रकार से परमात्मा को अपने सन्निकट मानने वाला व्यक्ति इनसे मुक्त हो जाता है..... ऐसा व्यक्ति सब प्रकार से निर्भय हो जाता है। यह वास्तविकता है कि परमात्मा हमारे आस-पास हर समय मौजूद है और यह भी एक ध्रुव सत्य है कि परमात्मा से शक्तिशाली कोई और दुनियां में न है और न ही होगा। इस प्रकार के जब सर्वशक्तिमान परमात्मा को हम अपने आस-पास हमेशा अनुभव करेंगे तो भला हमें किसी से किसी प्रकार का भय कैसे रहेगा.....? ऐसा मानने वाले व्यक्ति को ईश्वरप्रणिधान की सिद्धि भी प्राप्त हो जाती है अर्थात् वह मन, वचन व कर्म से परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाता है। इस समर्पण से उसे बल, तेज, ओज और अपार शक्ति प्राप्त होती है....

प्रभु को अपने सन्निकट समझने वाला व्यक्ति एकदम आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो जाता है। एक बार हमने एक शिविर में एक विद्यार्थी से पूछा कि हमें परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना क्यों करनी चाहिए तो उसने बहुत ही भोलेपन से उत्तर दिया कि हमारे ऐसा करने से परमात्मा प्रसन्न होता है। मैनें उससे कहा कि इसका मतलब तो यह हुआ कि यदि हम प्रभु की स्तुति आदि नहीं करेंगे तो परमात्मा दुःखी रहेगा.... इसका अर्थ तो यह हो गया कि हम परमात्मा से बड़े हो गए क्योंकि जब चाहें हम उसे प्रसन्न कर दें और जब चाहें उसे दुःखी कर दें..... वह मुझे जब बेचारगी से देखने लगा तो मैनें कहा कि परमात्मा तो सर्वदा आनन्द स्वरूप है। वह हमारी स्तुति आदि करने से प्रसन्न नहीं होता है और यदि हम उसकी स्तुति आदि न करें तो वह दुःखी भी नहीं होता है। वास्तव में परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का फल यह होता है कि हम आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो जाते हैं। जीवात्मा अल्पज्ञ है और अल्पज्ञ होने के कारण हमें अपने से किसी बलवान की हर समय आवश्यकता अनुभव होती रहती है और जब कोई अपने से बहुत बलवान मिल जाता है तो हम निश्चिन्त और आत्मविश्वासी हो जाते हैं।

इसीलिए किसी ने बहुत अच्छी बात कही है-If there is no God then creat God. गीता में घबराए हुए अर्जुन को श्रीकृष्ण द्वारा विराट-रूप दिखाने का यही लक्ष्य था कि मैं अर्जुन को आत्मविश्वास से परिपूर्ण कर दूँ। अपने इस कृत्य में वे सफल भी हुए। जब अर्जुन को उस परमात्मा की अपार शक्ति तथा न्याय-व्यवस्था का अनुभव हुआ तो वह एकदम निर्भय हो गया..... उसका क्षत्रीय-भाव उदय हो गया और वह मोह-मुक्त हो गया..... यह भी एक वास्तविक सत्य है कि जब भी व्यक्ति पर कोई महान् कष्ट आता है तो उसे परमात्मा ही याद आते हैं। एक दिन व्हाटसैप में बहुत ही सुन्दर मैसेज आया। एक छोटे से बालक का चित्र था जिसने हाथ जोड़ रखे थे और एक वाक्य लिखा हुआ था-'परमात्मा न तो मैनें आपको कभी देखा है, न ही आपसे कभी बातचीत हुई है मगर पता नहीं क्यों मुझे जब भी कोई दुःख आता है तो आप मुझे बहुत याद आते हो।' आत्मा को दुःख में, कष्ट में परमात्मा ही याद आते हैं क्योंकि वही हमारा असली मित्र है क्योंकि वह हमसे बलवान है। अल्पज्ञ आत्मा को अपने से बलवान उस ईश्वर की सदा ही आशा बनी रहती है.....

पृष्ठ 2 का शेष-ध्वनि प्रदूषण और...

विरोध किया गया है।

यकोऽसकौ शकुन्तकऽआहल गिति वंचति।

विवक्षतऽइव ते मुख मध्वर्यो मा नस्त्वमभि भाषथाः।।

यजु. 23.23

अर्थ-हे (अध्वर्यो) यज्ञ के समान आचरण करने वाले राजा। (त्वम्) तू (नः) हम लोगों के प्रति (मा अभिभाषथा) झूठ मत बोल और (विवक्षत इव) बहुत गप्प-सप्प करने वाले मनुष्य के मुख के समान (ते) तेरा (मुखम्) मुख मत हो, यदि इस प्रकार (यकः) जो (असकौ) यह राजा गप्प-सप्प करेगा तो (शकुन्तकः) निर्बल पक्षी के समान (आहलक्) भली भांति उच्छिन्न जैसे हो (इति) इस प्रकार (वञ्चति) ठगा जायेगा।

वेद में ऊंची आवाज़ में बोलने से रोका गया है।

उप नो रमसि सूक्ते न वचसा वयं भद्रेण वचसा वयम्।

वनादधिध्वनो गिरो न रिष्यम कदाचन।। अथर्व. 20.127. 14

अर्थ-हे राजन् (नः) हमको (न) अब (उप) आदर से (रमसि) तू आनन्द देता है। (सूक्ते न) वेदोक्त (वचसा) वचन के साथ (वयम्) हम (भद्रेण वचसा) कल्याणकारी वचनों के साथ (आदिध्वनः) ऊँची ध्वनि वाली (गिरः) वाणियों को (कदाचन) कभी भी (न) न (रिष्येम) नष्ट करें।

ऊँची तीव्र ध्वनि से बहुत से सूक्ष्म जीव मर जाते हैं।

यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्त्राशिवा जघान।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः।।

ऋ. 10.23.5

अर्थ-(यः) जो प्रभु अथवा राजा (वि वाचः) विपरीत, विविध वाणी युक्त और (मृधुन्वाचः) मर्मवेधिनी वाणी प्रयोग करने वालों को (जघान) दण्डित करता है और जो (पुरू) बहुत से (सहस्त्रा) अनेक (अशिवा) अति दुष्टों को (जघाना) नाश करता है। हम (अस्य) इसके ही (तत् तत् इत् पौस्यं) उस बल वैभव का (गृणीमसि) वर्णन करते हैं। वह राजा अथवा प्रभु (पिता इव) पिता के समान (तविषीं वावृधे) बल एवं सेना को बढ़ाता है और (शवः वावृधे) अन्न तथा ज्ञान भी बढ़ाता है।

वा

अर्थ-(यः) जो (इन्द्रः) विद्युत पदार्थ (वाचा) गर्जन-तर्जन आदि कड़क से (विवाचः) अस्पष्ट वाले (मृध्रवाचः) हिंसक आवाज़ वाले (पुरू) बहुत से (सहस्त्र) अत्याधिक (अशिवा) अकल्याण-कारी जन्तुओं को (जघान) नष्ट कर देता है। (यः) जो (पिता, इव) पिता के समान जगत् की (तविषीम्) शक्ति को और (शवः) बल को (वावृधे) बढ़ाता है। (अस्य) इन्द्र के (तत्तत् इत्) उस-उस (पौंस्यम्) बल की हम (गृणीमसि) सराहना करते हैं।

भावार्थ-हम इस इन्द्र के उन कामों की प्रशंसा करते हैं जिनमें वह विविध प्रकार के कृमि कीटों आदि को बिजली की कड़क से नष्ट कर देता है।

अत्यधिक तीव्र ध्वनि का सैनिकों पर भी बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। कर्ण फोड़ ध्वनि से उनकी कार्य शक्ति प्रभावित होती है। उनके साहस में कमी आ जाती है। इसीलिए आमने-सामने के युद्ध में नगाड़े, दुन्दुभि को तेज आवाज़ में बजाया जाता है इससे शत्रु सैनिक डर जाते है। अथर्ववेद में ऐसा वर्णन है।

उच्चै र्घौषो दुन्दुभिः सत्व नायन् वानस्पत्यः संभृत् उसि याभिः।

वाचं क्षणुवानो दमयन्त्स-पत्नान्त्सिं ह इव जेष्यन्-भितंस्त-नीहि।।

अथर्व. 5.20.1

अर्थ-(उच्चैः घोषा) ऊँची आवाज करने वाला (सत्वनायन्) पराक्रमियों के समान आचरण करने वाला (वनस्पत्यः) सेवनीयों के पालकों (सेना पति आदि को) से प्राप्त (उस्रियाभिः) बस्तियों की रक्षक सेनाओं से (संभृतः) यथावत् रखा गया (वाचम्) शब्द (क्षुणुवानः) करता हुआ (सपत्नान्) शत्रुओं को (दमयन्) दबाता हुआ (दुन्दुभिः) ढ़ोल अथवा नगारा तू (सिंह इव) शेर के समान (जेष्यन्) विजय चाहता हुआ (अभि) सब ओर (तंस्तनीहि) गरजता है।

अगले मंत्र में बताया गया है कि शत्रु की सेना दुन्दुभि की तीव्र ध्वनि को सुनकर डर कर भाग जाती है।

ऋग्वेद में एक कृत्रिम सांड का वर्णन है जो तीव्र ध्वनि के साथ कुछ दुर्गन्धित पदार्थ वायुमण्डल में फैंकता है। शत्रु सेना इससे डर कर भाग जाती है।

ऋग्वेद में एक कृत्रिम सांड का वर्णन है जो तीव्र ध्वनि के साथ कुछ दुर्गन्धित पदार्थ वायुमण्डल में फैंकता है। शत्रु सेना इससे डर कर भाग जाती है। इस सांड पर कुछ भी व्यय नहीं होता है।

आरे अघा कोनिवत्था ददर्श यं युञ्जन्ति तम्वा स्थापयन्ति।

नास्मै तृणं नोदकमा भरन्त्युत्तरो धुरो वहति प्रदेदिशत्।।

ऋ. 10.102.10

अर्थ-(यः) जो (आरे) समीप में ही (अधा) शत्रुओं के नाश रूपी दुःखों को (करोति) उत्पन्न करता है। (कःनु) कौन (तम्) उसको (इत्था उ) इस प्रकार (ददर्श) देखता है। (यम्) जिस दुघ्रण को (युञ्जति) रथ में युक्त करते हैं और (तम् ऊँ) उसको (आस्था पर्यान्त) मारने के लिए स्थापित करते हैं। (अस्मै) इसके लिए (न तृणम्) न घास (न उदकम्) न पानी (भरन्ति) देते हैं। वृषभ का (उत्तरः) उत्तर भूत यह दुध्रण स्वामी को जय और शत्रु को भय (प्रदेशित) दिखाता हुआ (धुरा) धुरा को (वहति) ले चलता है।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।

सं क्रन्दनोऽनिमिष एक वीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्र।।

ऋ. 10.103.1

अर्थ-(आशुः) शीघ्रगामी (शिशानः) निश्चित (भीमः) भयंकर (वृषभ) सांड के (न) समान (घनाघनः) घातक (चर्षणीनाम्) मनुष्यों का (क्षोभणः) क्षुब्ध करने वाला (संक्रन्दनः) गर्जना करने वाला (अनिमिषः) निमेष रहित (एक वीरः) एक मात्र योद्धा (इन्द्र) विद्युत मेघों की (शतम्) सैंकड़ों (सेनाः) सेनाओं को (साकम्) एक साथ ही (अजयत्) जीतता है।

इसी प्रकार वेद में मृदुवाणी का भी वर्णन है। परन्तु लेख को अधिक विस्तार न देकर यहीं विराम देते हैं।

ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 18.02-2018 (रविवार) को ऋषि बोधोत्सव बड़ी ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। आर्य परिवार के उत्साही श्री बलराज वासदेव ने अपनी पत्नी श्रीमती देवी आर्य के साथ यजमान पद को ग्रहण किया। नगर से पधारे आर्यजनों ने परिवार सहित यज्ञ में आहुतियां डाली। तत्पश्चात् दयानन्द हाल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जयघोष करते आर्यजन पधारे। भजनों के कार्यक्रम में श्रमती उपासना बहल, श्रीमती ऊषा मायर, श्रीमती सरोज धीर और श्रीमती बिमला भाटिया ने स्वामी दयानंद को गीतों के माध्यम से याद किया। मंच से सचिव प्रो. यशपाल वालिया ने अमुक आर्य के दूरभाष पर आये ऋषि जीवन पर आधारित संदेश को लिपिबद्ध करके उपस्थित आर्यजनों को सुनाया। उन्होंने जोर देकर कहा कि कोई जागृत आत्मा ही सोये हुए लोगों को जगाने आती है और महर्षि दयानन्द केवल शिवरात्रि की रात को ही नहीं जागे, वे तो जीवन भर जागते रहे और वेद की ओर लौट जाने का संदेश दिया। अंतराल में छोटे बच्चों ने मन्त्र पाठ किया। कुमार मृदुल ऐरी, लवन्या, गौरी और संदीप सागर ने बारी-बारी जुबानी वेद मन्त्र सुनाये। प्रधान प्रो. नवल किशोर शर्मा ने बच्चों का उत्साह बढ़ाने हेतु उन्हें लेखन सामग्री बांटी और नकद इनाम भी दिया। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता था। अंत में मुख्य उदबोधन कर्ता प्रिं. कैलाश चन्द्र शर्मा ने उपस्थित आर्यजनों, विशेषकर बच्चों को स्वामी दयानंद के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का नारी जाति पर महती उपकार है। डा. प्रो. सविता ऐरी द्वारा स्वामी दयानंद पर एक मार्मिक कविता पढ़ने को स्वामी जी के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि बताया। उन्होंने यह भी कहा कि आज की विकराल समस्याओं को एक मात्र समाधान वैदिक पथ ही है और स्वामी दयानन्द का मार्गदर्शन एक महत्त्वपूर्ण प्रकाश स्तम्भ है। यदि आज के दिन जगे तो भ्रष्टाचार और आतंकवाद कल की बात रह जायेगी। शांति पाठ के पश्चात ऋषि प्रसाद बांटा गया, सभी ने आनंद माना और भाव विभोर होकर प्रस्थान किया।

-दर्शन कुमार गर्ग कोषाध्यक्ष

ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर श्री मुक्तसर साहिब में 14-02-2018 दिन बुधवार को ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाय गया। इसमें आर्य समाज श्री मुक्तसर साहिब की प्रबन्धक कमेटी के सदस्य एवं डी. ए. वी. ब्वायज स्कूल, डी. ए. वी. गर्ल्स स्कूल, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल का समस्त स्टाफ एवं विद्यार्थियों और स्थानीय आर्य भाइयों एवं बहनों और बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। 8.30 बजे हवन यज्ञ प्रार्थना में यजमानों श्री संजीव गुप्ता (एडवोकेट); श्री अंजुम खुराणा, श्री सुमन दाबडा एवं श्री सुरेन्द्र अरोड़ा (एस. डी. ओ) ने अपनी पत्नियों सहित भाग लिया। पुरोहित श्री हंसराज शास्त्री जी ने सम्पूर्ण हवन यज्ञ प्रार्थना सम्पन्न करवाई। पुरोहित श्री हंसराज शास्त्री जी ने सभी आर्य भाइयों एवं बहनों को अपने अपने घरों में हवन यज्ञ करवाने के लिए कहा। इसके पश्चात् हारमोनियम पर श्री अभिनव एवं हरजोत ने भजन गाकर सभी का मन जीत लिया।

अपने सम्बोधन में आर्य समाज श्री मुक्तसर साहिब के प्रधान श्री लीलाधर जी गुप्ता ने हवन यज्ञ की महत्ता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हवन यज्ञ प्रार्थना से सम्पूर्ण जलवायु प्रदूषण रहित हो जाता है। उन्होंने आगे बताया कि भोपाल गैस कांड जिसमें सैकड़ों लोग मृत्यु का ग्रास बन गए थे, सिर्फ दो घर बचे थे जो प्रतिदिन हवन यज्ञ प्रार्थना करते थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में प्रार्थना की कि आप अपने घरों में महीने में कम से कम एक बार हवन यज्ञ प्रार्थना जरूर करें और प्रयत्न करें कि इससे ज्यादा हो सके तो इस प्रदूषण के समाने में जलवायु स्वच्छ हो सके। उन्होंने मातृ शक्ति के उत्थान के लिए प्रयत्न करने को कहा तथा सभी को अपने अपने बच्चों को ज्यादा शिक्षित करने को कहा क्योंकि स्वामी दयानन्द जी के प्रयत्नों से ही डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं का शुभारम्भ हुआ। शान्तिपाठ के बाद सभी ने प्रसाद के रूप में भोजन ग्रहण किया। इस सभा में श्री राजेन्द्र भण्डारी जी, उनकी सुपत्नी श्रीमति किरण भण्डारी जी प्रधान स्त्री आर्य समाज, श्री मुख्तियार सिंह उपप्रधान आर्य समाज, डा. अजय सेतिया जी, श्री स्वर्ण सिंह वालिया जी, डा. सुरेन्द्र मोहन भण्डारी जी, सुरेन्द्र अहूजा जी, श्री विजय वाटस जी, श्री राजीव दाबड़ा जी, श्री जगप्रीत दाबड़ा जी, श्री राजीव कुमार, श्री पी. के. लाल, श्रीमति हरपाल कौर, एवं श्रीमति स्वर्ण और इस अवसर पर मौजूद थे।

-सुभाष खुराणा मन्त्री आर्य समाज श्री मुक्तसर साहिब

अमृतसर में ऋषिबोधोत्सव मनाया

केन्द्रीय आर्य सभा, अमृतसर के तत्वावधान में युग प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती सरस्वती जी का जन्मोत्सव व बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य महा सम्मेलन 10-11 फरवरी 2018 को वरिष्ठ एडवोकेट श्री सुदर्शन कपूर जी की अध्यक्षता में आर्य समाज शक्ति नगर के प्रांगण में बड़े उत्साह और हर्षोल्लास से मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के ब्रह्मा प्रो. विनय विद्यालंकार जी और दयानन्द मठ दीना नगर से पधारे ब्राह्मचारीयों ने करवाया। श्री इंदपाल आर्य गौरव तलवाड़ तथा स्थानीय डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं के छात्र/छात्राओं प्रभु भक्ति तथा ऋषि महिमा के भजनों का गुणगान कर सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. विनय विद्यालंकार विश्व विख्यात वैदिक प्रवक्ता ने अपने ओजस्वी प्रवचनों में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज, देश, संस्कृति और धर्म की उन्नति के कई कार्य किए। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव जाति के लिए प्रेरणादायक है। उन्होंने चारो वेदों के शतक्म का विस्तार में भी वर्णन किया। कार्यक्रम में श्री जे. पी. शूर निर्देशक पी. एस. डी. ए. वी. सी एम सी समिति नई दिल्ली विशेष में पधारे इनके अतिरिक्त प्रिं. शर्मा, प्रिं. अंजना गुप्ता, डॉ. अनीता, नरेन्द्र, रेण वशिष्ठ, केन्द्रीय आर्य सभा के महामन्त्री श्री राकेश मेहरा, प्रधान श्री दर्शन कुमार श्री एच. एल. कंधारी, जुगल किशोर आहूजा, मुकेश आनन्द, दीपक महाजन, अतुल, संदीप तथा अमृतसर की समस्त आर्य समाजो के सभी पदाधिकारी तथा नगर के गणमान्य व्यक्ति शामिल थे।

शांति पाठ के तत्पश्चात् ऋषि लंगर वितरण किया गया।

-राकेश मेहरा महामन्त्री

ऋषि बोधोत्सव पर विशेष कार्यक्रम

आर्य समाज खलासी लाईन के प्रांगण में यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान श्री रोशनलाल अरोड़ा रहे। यज्ञ वैदिक विद्वान सुरेन्द्र कुमार चौहान के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञीय प्रार्थना के उपरांत वैदिक भजनोपदेशक श्री रविकांत राणा जी ने भजनों के माध्यम से वातावरण को भक्तिमय करते हुए कहा-कण-कण में बसा प्रभु देख रहा, चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो, कोई उसकी नजर से बच न सका चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो। तत्पश्चात् वातावरण को भक्तिमय करते हुए योगराज शर्मा जी ने भजनों के माध्यम से कहा उस प्रभु महानतम् को मैं खूब जानता हूँ उसकी महानता को ही जग में बखानता हूँ। तत्पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वैदिक विदुषी श्रीमति रश्मि गर्ग जी ने शिवरात्रि पर्व पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को सच्चे शिव के आभास का संजीव चित्रण किया और कहा उनके मन में यह भाव आया जो शिव अपनी रक्षा नहीं कर सकता वह अन्यों की रक्षा क्या करेगा। खाद्य पदार्थ खाते देखकर महर्षि को यह आभास हुआ।

13 वर्ष भ्रमण करने के उपरान्त किसी ने बताया कि आप मथुरा जाकर स्वामी विरजानन्द जी के पास अध्ययन करो तत्पश्चात् उन्होंने मथुरा जाकर विद्यार्जन करा। 14 वर्ष की आयु में उन्होंने यजुर्वेद कंठस्थ कर लिया था। शिवरात्रि पर उपवास रखने पर निद्रा की अवस्था में पानी के छींटे मार-मारकर स्वयं को सचेत किया करते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं को हमें अपने जीवन में उतारना चाहिए। गृहस्थ में रहते हुए उनकी शिक्षाओं पर आचरण करना चाहिए। तभी बोधोत्सव मनाना हमारे लिए सार्थक होगा और कहा ''वयं स्याम पतयो रयीणाम्'' हे प्रभु हम लोग धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें। इस मन्त्र का उन्होंने विस्तार से वर्णन किया। (ऋग्वेद 10.121.10)

मंच संचालन आर्य समाज खलासी लाइन के मंत्री श्री रविकांत राणा जी ने किया। तत्पश्चात् शांतिपाठ श्री नरेन्द्र गर्ग जी ने कराया व प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और उपस्थिति निम्न रही। यजमानों को आशीर्वाद विद्वानों ने दिया। सुरेन्द्र चौहान, रविकांत राणा, सुरेश सेठी, शांति देवी, शोभा आर्या, सुरेन्द्र कुमार आर्य, सुरेन्द्र यादव, सुमन गुप्ता, रोशनलाल, रविन्द्र आर्य, रमेश राजा, योगराज शर्मा, रमा देवी, डा. राजवीर सिंह वर्मा आदि रहे। तत्पश्चात् प्रसाद वितरण से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ऋषि बोधोत्सव का पर्व मनाया

आर्य समाज जालन्धर छावनी में शिवरात्रि का पर्व ऋषि बोधोत्सव के रूप में धूमधाम से मनाया गया जिसमें आर्य समाज के सदस्यों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम प्रात: 9 बजे हवन यज्ञ के साथ शुरू हुआ और तीन हवनकुण्ड़ों पर यजमान परिवारों ने यज्ञ किया। यजमान के तौर पर परिवार सहित श्रीमती मेनका महाजन, कनिष्क महाजन, श्री अशोक मित्तल, श्री राकेश आर्य, मुनीष महाजन, शामिल हुए। यज्ञ के ब्रह्मा श्री नन्द दुलाल जी थे। यज्ञ के पश्चात के. एल. हाई स्कूल की छात्राओं ने भजन गाकर महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला और नारी जाति के उत्थान के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन किया तथा अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुख्य वक्ता श्री सुशील शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द का गुणगान करते हुए उनके द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में दिए गए योगदान की चर्चा की। देश में फैली हुई बुराईयों सती प्रथा, बाल विवाह, महिलाओं को शिक्षा प्रदान न करना, असमानता, आदि को दूर करने के लिए बीड़ा उठाया। विदेशी राजा चाहे जितना भी अच्छा हो अपने राज्य की तुलना में निम्न होता है। ऐसे प्रखर देशभक्ति के विचार जनमानस को दिए। स्वयं को प्रखर राष्ट्रभक्त, जागरूक और समर्पित राष्ट्रसेवक बनने की प्रेरणा दी। उनके प्रकट किए विचार और कार्य आज भी मूल्यवान हैं। इस प्रकार श्री सुशील शर्मा जी ने अपने व्याख्यान में महर्षि दयानन्द के कार्यों को अपने जीवन में उतारने का संदेश दिया। मंच का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री जवाहर लाल महाजन द्वारा किया गया। कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया तथा सभी आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

-जवाहर लाल महाजन मन्त्री आर्य समाज

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट...

बुद्धिराजा जी ने अपनी मधुर आवाज में ध्वज गीत का गायन किया। तत्पश्चात सत्संग हाल में सुमेधा और गगनदीप कौर बृजेन्द्रा कालेज की छात्राओं ने संगीत मय भजन, परिन्दों को ये समझाओ वो मौसम फिर से आयेगा तथा धन्य है तुम को ऋषि भजन प्रस्तुत किया। डा. विशेष जी ने दूसरों के गुण, अपनी गलतियों को देखा करो भजन प्रस्तुत किया। रिंकू जी ने ऋषि दयानन्द पर भजन प्रस्तुत किया। सुश्री सुमेधा जी ने ऐसी कमाई कर लो जो संग जा सके भजन प्रस्तुत किया। सभी भजनों को लोगों ने बहुत पसन्द किया। इसके पश्चात मोगा से विशेष रूप से पधारे पंडित दिवाकर भारती जी का ओजस्वी एवं प्रेरणापद व्याख्यान हुआ। जिसमें उन्होंने ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन की मुख्य घटनाओं पर प्रकाश डाला एवं सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक संस्कृति की विशेषता बताई। कार्यक्रम में मंच संचालन कर रहे डा. निर्मल कौशिक जी ने ऋषि दयानन्द जी द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। अन्त में आर्य समाज मंदिर फरीदकोट के पुरोहित कमलेश शास्त्री जी ने बताया कि आर्य समाज फरीदकोट में इसी तरह मार्च महीने में भी कार्यक्रम किया जायेगा एवं आए हुये सभी आर्यजनों का धन्यवाद किया। पंडित दिवाकर भारती जी का विशेष रूप से सम्मान किया गया। तत्पश्चात सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

-कमलेश कुमार शास्त्री पुरोहित आर्य समाज फरीदकोट

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20 RNI No. 26281/74

स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर का माघ मास का गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

स्त्री आर्य समाज मंदिर माडल टाऊन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाले गायत्री महायज्ञ में पूर्णाहूति के समय बड़े हर्षोल्लास के साथ यज्ञ करते हुये आर्य जन जबकि चित्र दो में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज माडल टाउन के प्रधान श्री अरविन्द घई, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी एवं अन्य।

स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन जालन्धर में माघ महीने में चलने वाला गायत्री महायज्ञ दिनांक 13 फरवरी 2018 मंगलवार को पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। 14 जनवरी मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होकर यह गायत्री महायज्ञ बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ एक महीने चला और इस महायज्ञ में बहनों तथा भाईयों ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। प्रतिदिन काफी संख्या में लोगों ने यजमान बनकर उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। लगातार एक महीने तक बाहर से आए विद्वानों के प्रवचन होते रहे। इस कार्यक्रम की यह विशेषता है कि बाहर से भजनोपदेशकों को नहीं बुलाया जाता और स्त्री समाज की बहनों के द्वारा भजन गाए जाते हैं। इस वर्ष 14 से 20 जनवरी तक स्वामी विश्वानन्द जी मथुरा , 21 से 25 जनवरी तक आचार्य सुरेश शास्त्री जी जालन्धर, 28 जनवरी से 3 फरवरी तक आचार्य राजू वैज्ञानिक दिल्ली, 5 फरवरी से 13 फरवरी तक महात्मा चैतन्यमुनि जी एवं माता सत्याप्रिया जी सुन्दरनगर वालों के प्रवचन होते रहे। सभी विद्वानों ने गायत्री महामन्त्र, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, मर्यादा पुरूषोत्तम राम, योगीराज श्रीकृष्ण, महाभारत, रामायण एवं वेदों के ऊपर चर्चा करते हुए सभी को आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। यह सम्पूर्ण कार्यक्रम स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी की अध्यक्षता में चलता रहा जिसमें सभी बहनों ने अपना तन-मन और धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। दिनांक 13 फरवरी 2018 मंगलवार को माघ मास में चलने वाले इस गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति 31 हवनकुण्ड़ों पर की गई। पूरे मास के हवन यज्ञ में जिन्होंने यजमान बनकर आहुतियां डाली थीं, आज उन्होंने अपने परिवार सहित पूर्णाहुति ड़ालकर यज्ञ सम्पन्न किया। निरन्तर एक महीने तक चलने वाले इस यज्ञ में 200 से ज्यादा परिवारों ने यजमान पद को ग्रहण किया। पूर्णाहुति के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा, श्रीमती सुशीला भगत, संगीता भगत, राकेश भगत, नीरू कपूर, श्रीमती रजनी सेठी मुख्य यजमान बनें। यज्ञ के पश्चात विद्वानों ने यजमान परिवारों को आशीर्वाद प्रदान किया। पूर्णाहुति के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य समाज के सत्संग हाल में शुरू हुआ। पं. बुद्धदेव ने तथा माता सत्याप्रिया जी ने प्रभु भक्ति के मधुर भजन गाकर ईश्वर की महिमा का गुणगान किया। महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का बोधोत्सव आज देश भर में बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। उन्होंने सभी को स्वामी दयानन्द के दिखाए मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा दी। उन्होनें कहा कि श्रेष्ठ कर्म करने के लिए जप, यज्ञ, साधना और ईश्वर की उपासना करना आर्यों का कर्त्तव्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि गायत्री वेदमाता सार्वभौमिक है और गायत्री की उपासना करने से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निखार होता है। आर्य समाज के प्रधान श्री अरविन्द घई जी ने कहा कि आर्य समाज अनुभवी लोगों का समूह है तथा सभी का कर्त्तव्य है कि वह नगर के अन्य समाजों को भी सहयोग दें। उन्होंने महर्षि दयानन्द बोधोत्सव की सभी को बधाई दी तथा उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। विशेष अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी जी का जीवन बड़ा संघर्षमय रहा। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को दूर करते हुए नारी जाति को शिक्षा का अधिकार दिलाया। इसलिए हमें ऋषि दयानन्द के उपकारों को कभी नहीं भूलना चाहिए। श्री सुदर्शन शर्मा जी ने सभी को उत्साह के साथ आर्य समाज के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया। लगातार एक महीने तक इस कार्यक्रम को निरन्तर उत्साह के साथ चलाने के लिए उन्होंने स्त्री आर्य समाज की सराहना की तथा बधाई दी। स्त्री आर्य समाज की मन्त्राणी श्रीमती प्रोमिला अरोड़ा जी ने स्त्री आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई।

श्रीमती ज्योति शर्मा तथा श्रीमती नीरू कपूर ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मंच का संचालन किया। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत ने प्रिंसिपल श्री विनोद चुघ, दमयन्ती सेठी, पूनम, सुनीता, बाला मधोक, आरती, निधि कपूर, अजय महाजन, राजेन्द्र विज, डॉ. सुषमा चोपड़ा, डॉ. सुषमा चावला, प्रिंसिपल सरिता वर्मा तथा अन्य सभी गणमान्य अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया। श्रीमती सुशीला भगत जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि स्त्री आर्य समाज मॉडल टाऊन आप सभी के योगदान से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर है। स्त्री आर्य समाज के द्वारा समय-समय पर समाजसेवी संस्थाओं, गुरूकुलों तथा गरीब कन्याओं की शादी के लिए सहायता प्रदान की जाती है। इन कार्यों में सभी बहनों का भरपूर सहयोग मिलता है। इसलिए मैं सभी बहनों का, भाईयों का तहे दिल से धन्यवाद करती हूँ। इस अवसर पर आर्य समाज मॉडल टाऊन के प्रधान श्री अरविन्द घई, मन्त्री श्री अजय महाजन, श्रीमती राजमोहिनी सोंधी, श्रीमती ज्योति शर्मा, डॉ. सुषमा चोपड़ा तथा बहुत से गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। सारा सत्संग हाल खचाखच भरा हुआ था।

प्रोमिला अरोड़ा, रजनी सेठी
मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर आर्य समाज कोटकपूरा के प्रधान डा. विशेष बुद्धिराजा ध्वजारोहण करते हुये जबकि चित्र दो में आर्य समाज मोगा के पुरोहित श्री दिवाकर भारती जी का सम्मान करते हुये आर्य समाज फरीदकोट के पदाधिकारी एवं अन्य। चित्र में आर्य समाज के पुरोहित श्री कमलेश शास्त्री जी भी दिखाई दे रहे हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में एक सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में शिवरात्रि पर किया गया। प्रात:काल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा पंडित कमलेश कुमार शास्त्री जी ने चार यजमानों को सपत्नीक बैठा कर पावन यज्ञ को सम्पन्न किया। यज्ञोपरान्त कोटकपूरा से आए मुख्य मेहमान डा. विशेष बुद्धिराजा जी से ध्वजारोहण करवाया गया। डा. विशेष

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।